ISSN No. 2394-9996

Multi Disciplinary Research Journal
New Vision

New Vision

Multi-disciplinary Research Journal

January 2017

Online version : http://www.milliyaresearchportal.com

Anjuman Ishat -e- Taleem Beed's
Milliya Arts, Science & Management Science College,
Beed- 431122 (Maharashtra)
Website : www.milliyasrcollege.org
E-mail.ID : newvisionjournal@gmail.com

Scanned with CamScanner

Sr. No.	Title of Research Paper	Author	Sub	P.No.
14	अल्मा कबूतरी में चित्रित संघर्षशील नारी	प्रा. डॉ. चित्रा धामणे	हिंदी	54
15	विज्ञापन में नारी का अस्तित्व	प्रा.आहेर संगीता एकनाथराव	हिंदी	57
16	विकलांग-विमर्श कारण तथा चुनौति	डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर	हिंदी	60
17	'जनता का मोर्चा' नाटक में साम्प्रदायिक सद्भाव एवं राष्ट्रीय एकात्मता	प्रा. संतोष नागरे	हिंदी	64
18	धूमिल के काव्य में जनवादी चेतना	डॉ. सय्यद अमर फकिर	हिंदी	67
19	'जीवन हमारा' में व्यक्त शोषण, दमन और रूदन	प्रा. प्रकाश गायकवाड	हिंदी	71
20	शांता शेळके यांची भाषाशैली	डॉ. सरकटे सदाशिव	मराठी	75
21	'संभूती' कृषी जीवनाशी निगडीत स्त्रीच्या जीवनातील फरफट रेखाटणारी कादंबरी	स.प्रा. ढास रवींद्र	मराठी	81
22	दलित साहित्यातील मानवता	प्रा. नामदेव शिनगारे	मराठी	84
23	दौलताबाद शहराचे महत्त्व	डॉ. शेख कलीम मोहियोद्दीन	इतिहास	89
24	मुक्ती संग्रामातील योध्दा	प्रा. हुसेन ईमाम प्रा. मोहन जगन्नाथ काळकुटे	इतिहास	92
25	नवभारत निर्मितीत स्वामी विवेकानंदाचे शक्तीदाय विचार	प्रा. श्रीमती सुनिता शंकरराव कुरूडे	इतिहास	94
26	सामाजिक समायोजनामध्ये वर्तन एक महत्त्वपूर्ण घटक	प्रा. मलेका शाहिन अब्दुल गफार	गृह विज्ञान	98
27	" सावित्री फुलेंचे स्त्री चळवळीतील योगदान व आजची महिला "	प्रा. जाधव एस.बी.	गृह विज्ञान	100
28	"संत साहित्यातील आहार विचार "	डॉ. शिल्पा खोत-देशपांडे	गृह विज्ञान	104

Scanned with CamScanner

ISSN No.2394-9996

'जनता का मोर्चा' नाटक में साम्प्रदायिक सद्भाव एवं राष्ट्रीय एकात्मता

- संतोष नागरे
सहा.प्रा.- हिन्दी विभाग
र.भ.अट्टल महाविदयालय,
गेवराई जि.बीड

केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'जनता का मोर्चा' लघु नाटक है। जो हमें १९४६ में कलकत्ता में घटित दंगों के माध्यम से साम्प्रदायिकता की समस्या से अवगत कराता है। साम्राज्यवादी अंग्रेज तथा देशी सामंत एवं पूँजीवादी वर्ग ने अपने हितों की रक्षा के लिए देश में साम्प्रदायिकता का जहर फैलाकर देश की एकता एवं अखंडता में फूट डालने का प्रयास किया। साम्प्रदायिकता से शहरी एवं ग्राम जीवन काफी प्रभावित हुआ। साम्प्रदायिकता की विभीषिका को बयान करते हुए नाटककार ने मानवता धर्म पर बल देते हुए गाँव की एकता एवं अखंड़ता को बरकरार रखा है।

I शोषणकारी साम्राज्यवादी - सामंतवादी एवं पूँजीवादी व्यवस्था की पोलखोल -

साम्राज्यवादी अंग्रेजों ने इस देश के जमींदारों और पूँजीपतियों के साथ मिलकर दस देश को लूटा। अंग्रेजों ने देश की आजादी की लड़ाई को कमजोर करने के लिए 'फूट डालो, राज करो' की नीति अपनायी। इस नीति के तहत आजादी की लड़ाई को जान-बुझकर हिन्दू-मुस्लिम धर्म की लड़ाई का रुप दिया गया। जिसके तहत भारत में दंगे करवाये गये। जुम्मन चाचा इसकी पोल खोलते हुए कहते हैं,- "मैं फिर कहता हूँ कि यह हिन्दू- मुस्लिम दंगा जनता को (आवाम) आजादी की तरफ कदम बढ़ाने से रोकने के लिए ही थैलीशाह, जमींदार और इलाकेदार केवल अपनी हुकूमत कायम रखने के लिए ही कराते हैं।"[१] साम्राज्यवादी अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य के लिए, जमींदारों ने अपनी जमीन के लिए तो पूँजीपतियों ने अपनी पूँजी को सुरक्षित बचाये रखने के लिए ही समाज में साम्प्रदायिकता का जहर फैलाया। जुम्मन चाचा कहते हैं,- "यह बड़े मार्के की बात है कि आजादी की लड़ाई के वक्त ही हिन्दू-मुस्लिम की लड़ाई भी होती है। इसकी वजह भी बड़ी माकूल है। वह यह कि बड़े - बड़े करोड़पति व अलाकेदार जो अब तक दूसरों का खून चूसते आते हैं, वह यह बरदाश्त नहीं कर सकते की आजादी हिन्दुस्तान को जन्नत बना दे। इसलिए यह लोग सरकारशाही की तरफदारी करने लगे हैं और उससे मिलकर करारा नफा उठाते हैं। इलाकेदारों के इलाकें बचे रहते हैं। पूँजीपतियों के कारखानें सही-सलामत रहते हैं। दोनों मौज मारते हैं एक तीसरी ताकत की छाया में। अगर ऐसा न होता तो अंग्रेजी हुकूमत इस आग लगानेवाले नेताओं को, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, गिरफ्तार कर लेती, पर वह न पकड़े जाते हैं न रोके जाते हैं। इससे साफ जाहिर है कि वह किसी के रुख पर चल रहे हैं।"[२]

II साम्प्रदायिकता की विभीषिका -

साम्राज्यवादी - सामंतवादी एवं पूँजीवादी व्यवस्था ने अपने हितों की रक्षा के लिए समाज में फूट डालने हेतु साम्प्रदायिकता की आग भडकाने का काम किया। कलकत्ता, गढ़मुक्तेश्वर, अलीगढ़, बिहार, नोआखाली, बम्बई, लाहौर में घटित दंगे इसका प्रमाण है। साम्प्रदायिकता की आग में झुलसती मानवता की चीख को बयान करते हुए जुम्मन चाचा कहते हैं, - "शहर में हिन्दू - मुसलमान सुनते-सुनते तबियत परेशान हो गई। मुसलमानी पानी, हिन्दू पानी, मुलममानी रोटी, हिन्दू रोटी यह जहर इतना फैला गया है कि जिन्दगी से मजा चला गया है"।[३]

III शहरी एवं ग्राम जीवन का यथार्थ चित्रण -

साम्प्रदायिकता की विभीषिका से शहरी एवं ग्राम जीवन काफी प्रभावित हुआ। जुम्मन चाचा रोजी - रोटी की तलाश में गाँव छोड़कर कलकत्ता चले गये थे। कलकत्ता में लगी साम्प्रदायिकता की आग से अपनी जान बचाते हुए जुम्मन चाचा गाँव भाग आये।

Scanned with CamScanner

गाँव में सब लोग मिल-जुलकर रहते हैं। शहर में एक दूसरे पर भरोसा न रहने से हिन्दू - मुसलमान एक - दूसरे के खून के प्यासे हो गये। शहर और गाँव की दूरी को स्पष्ट करते हुए जुम्मन चाचा कहते हैं,- "एक बार कलकत्ता में जाकर देखे तो पत्ता चले। दिन - रात छूरेबाजी होती है। राह चलना घर से निकला, मुश्किल हो गया है। आदमी ऐसे काटे जाते हैं, जैसे मकई के भुट्टे। ऊफ ! बेटा ! इस गाँव की हवा में जिन्दगी को बल और बिसवास तो फिर मिला।"[४]

शहर में लगायी गयी साम्प्रदायिकता की आग गाँव की ओर तीव्र गति से बढ़ रही है। शहर से हिन्दू - मुस्लिम धर्म के प्रमुख आकर गाँव के परिवेश को दूषित करने पर तुले हुए है। शहर में लगी साम्प्रदायिकता की आग की जहरीली हवा से गाँव के मानवता धर्म की रक्षा पर बल देते हुए जुम्मन चाचा कहते हैं, - "भाईयों, हिन्दुओं और मुसलमानों, यह दानों का प्यारा गाँव है। इसपर किसी एक जातिवाले का अधिकार नहीं है। आज हिन्दुओं को भड़काने के लिए शहर के कुछ हिन्दू आ रहे हैं। मुसलमानों को भड़काने के लिए शहर के कुछ मुसलमान आ रहे हैं। हिन्दुओं की सभा एक तरफ होने जा रही है। मुसलमानों की दूसरी तरफ। अब शहर में दंगे की फसाद की आग हमारे प्यारे गाँव में फैलनेवाली है। हमको आपको इस खून की होली को नहीं होने देना है। नहीं होने देना है। न आप हिन्दुओं की सभा में जाइए न मुसलमान की सभा में।"[५]

IV साम्प्रदायिक सद्भाव एंव राष्ट्रीय एकात्मता -

कोई भी धर्म मानवता से बड़ा नहीं है। साम्प्रदायिकता के चक्कर में पड़कर एक - दूसरे के खून के प्यासे बने हिन्दुओं और मुसलमानों को वास्तविक मानवता धर्म से अवगत कराते हुए जुम्मन चाचा कहते हैं,- "जब मेरे गले पर बद्री की छूरी चलेगी, तब गाँव की हालत क्या होगी। पड़ोसी - पड़ोसी का दुश्मन हो जाएगा। एक कुहराम मचेगा जो हम सबको बहरा कर देगा। औरत की अस्मत लुटेगी। बच्चों को मूली की तरह काट डाला जाएगा। मर्द बकरों की तरह हालाल किये जायेंगे। घरों पर मौत डेरा जमा लेगी। इन्सान-इन्सान को न देख सकेगा। धरती लाशों से पट जायगी। खून की नदियाँ बह जाएँगी। हरा-भरा आबाद गाँव मरघट बन जाएगा। भाई, ऐसा क्यों हो, इस आनेवाले खतरे को हमें रोक देना चाहिए। इसमें ही सब की खैरियत है।"[६] साम्प्रदायिक विद्वेष से राष्ट्रीय एकात्मता को तहस-नहस किया जा रहा है। साम्प्रदायिक जहर से अपने गाँव की एकता एवं अखंड़ता की सुरक्षा के लिए शहर से आये हुए हिन्दुओं और मुसलमानों की बातों में न आने का आव्हाहन करते हुए जुम्मन चाचा कहते हैं,- "इसलिए बहादुरों !(हिन्दुओं की ओर इशारा करके) तुम गंगाजी लेकर कसम लो की कोई भी इस गाँव में घुसने न पाएगा। जो आएगा उसे वापस जाना पड़ेगा। यह गाँव हिन्दू - मुसलमान दोनों का है। (मुसलमान की ओर इशारा करके) और तुम भी कुरान शरीफ पर हाथ रखकर कसम लो की तुम भी गाँव में किसी को न आने दोगे। जो आए उसे वापस कर दोगे। यह गाँव हिन्दू - मुसलमान दोनों का है।"[७] जुम्मन चाचा द्वारा दिखाये गये मानवता धर्म के पथ पर चलने का आव्हाहन स्वीकार करती हुई गाँव की जनता एक स्वर में कहती हैं-

"हम हिन्दू - मुसलमान एक हैं। / गाँव दोनों का है / हम अपनी एका न टूटने देंगे। /
जान चली जाए लेकिन गला न काटेंगे। / आनेवालों को वापस जाना पड़ेगा।"[८]

V जनता के प्रति अटूट आस्था -

'जनता का मोर्चा' नाटक के माध्यम से नाटककार की जनता के प्रति अटूट आस्था व्यक्त हुई है। जनशक्ति के सामने धर्म एवं धन शक्तियाँ घुटने टेक देती है। शहर से गाँव में आये हुए हिन्दू - मुसलमान जुलूस निकालते हैं। एक और हिन्दुओं का जुलूस है तो दूसरी ओर मुसलमानों का और बीच में गाँव की जनता का दोरुखा मोरचा। शहर से आये कट्टर हिन्दुत्ववादी चिल्लाते हैं-

"हम तो गाँव में आएँगे ही, अपनी धाक जमाएँगे ही। / हिन्दू जोर दिखाएँगे ही, मुस्लिम मार भगाएँगे ही। / जय बजरंग बली की।"[९]

हिन्दुओं की इस कट्टरता के विरुध्द प्रतिक्रिया देते हुए मुसलमान चिल्लाते हैं-

"हम गाँव में जाएँगे, रोके न रुकेंगे। / इस गाँव की धरती को हम छू के रहेंगे।
इस्लाम के बंदे हैं, पीछे न हटेंगे, / इस्लाम के झंडे को फहराके रहेंगे। / अल्हा हो अकबर !"[१०]

Scanned with CamScanner

गाँव की जनता इन दोनों जुलूसों से अलग खड़ी हुई है। जो इंसानियत के पथ पर चलना चाहती है। गाँव की जनता धर्मांध शक्तियों के विरुध्द मोरचा निकालती हुई एक स्वर में कहती है-

"हम एक हैं, हम एक हैं, तुम आ न सकोगे। / इस गाँव की सुख-शान्ति को, तुम खा न सकोगे।
हम एक हैं, हम एक हैं, हम एक रहेंगे। / सौ बार हाँ, सौ बार हाँ, हम वार करेंगे। / जय हो जनता की।"[११]

इसप्रकार गाँव की जनता धर्मांध विभाजनकारी शक्तियों के विरुध्द एकत्र आकर गाँव की एकता एवं अखंडता को बरकरार रखती है।

सारांश :-

साम्राज्यवादी अंग्रेज, देशी सामंत एवं पूँजीपतियों ने स्वतंत्रता पूर्व अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए साँठ- गाँव की। तत्पश्चात समाज में साम्प्रदायिकता का जहर फैलया। जिसकी पोल खोलते हुए नाटककार ने राष्ट्रीय एकता, अखंड़ता तथा साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए संघर्षरत जनता की विजयगाथा को 'जनता का मोर्चा' नाटक के माध्यम से रेखांकित किया है।

संदर्भ ग्रंथ :-

१. सम्पा.नरेंद्र पुण्डरीक, केदार : शेष-अशेष, पृ. १२४
२. वही, वही, पृ.१२९
३. वही, वही, पृ.१२२
४. वही, वही, पृ.१२२
५. वही, वही, पृ.१२७
६. वही, वही, पृ.१२८
७. वही, वही, पृ.१२९-१३०
८. वही, वही, पृ.१३०
९. वही, वही, पृ.१३०
१०. वही, वही, पृ.१३०
११. वही, वही, पृ.१३०

Scanned with CamScanner